नहीं कि विश्वरूप आदि है और श्रीकृष्ण उसके अथवा विष्णुरूप के प्रकाश-विशेष हैं। वस्तुतः श्रीकृष्ण ही सब रूपों के मूल हैं। विष्णुरूप असंख्य हैं, पर भक्त के लिये श्रीकृष्ण के मूल, द्विभुज श्यामसुन्दर रूप के अतिरिक्त अन्य कोई रूप महत्त्व नहीं रखता। **ब्रह्मसंहिता** के अनुसार श्रीकृष्ण के श्यामसुन्दर रूप में प्रेमभक्तिभाव वाले अनुरागी भक्तों को हृदय में नित्य निरन्तर उनका दर्शन हुआ करता है, अन्य कुछ दृष्टिगोचर ही नहीं होता। अतएव, ग्यारहवें अध्याय का तात्पर्य है कि श्रीकृष्ण का श्यामसुन्दर रूप परम सार और सर्वोपरि है।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः।।११।।

इति भक्तिवेदान्त भाष्ये एकादशोऽध्यायः।।